दोस्त

किसे बनायें...?

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

हिंदी तर्जुमा:

कलीम रज़वी

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

किसे बनायें...?

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

तर्जुमानिगार:

कलीम रज़वी

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

Book name : Dost kisey Banaye..?

Language : Hindi

Author : Muhammad Hassaan Raza Rayeeni

Translated by (in Hindi) : Kaleem Razvi

Date : 22 April 2020

Publisher : Tehreek Nizam e Mustafa (India)

Any Query, contact us : 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit : archive.org/@tehreek_nizam_e_mustafa_

Also follow us on : Facebook || Instagram || Youtube

About Us

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza.
It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized.

It is supplicated to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

कलिमात ए हसन

अज़ हज़रत अल्लामा मौलाना जावेद रज़ा मरकज़ी साहब क़िब्ला

आज इस पुर फितन दौर में मुसलमान फ़िक्र ए आख़िरत की कमी के बाइस दुनयावी मफाद की खातिर किसी से भी दोस्ती कर लेते हैं और बहुत बार अपने हम नशीनों की वजह से अख़लाक़ ए रज़ीला इख़्तियार कर लेते हैं और कुछ जगह देखने में आया के अपने अक़ाइद ही बिगाड़ लेते हैं अल अमान वल हफ़ीज़ ऐसे दोस्तों से!

जनाब हस्सान सल्लमाहु का मज़मून निहायत ही उम्दा है दोस्ती किस से की जाये ? इस में काफी मुआविन साबित होगा अल्लाह क़ुबूल फरमाए

तक़रीज़

अज़ उस्ताज़ ए मुहतरम हाफिज मुहम्मद तौहीद अहमद खान रज़वी साहब क़िब्ला

मुदर्रिस जामिया तहसीनिया जिया उल उलूम बरेली शरीफ

“नेकों की सोहबत तुझे नेक बनाती है”

सोहबत इंसान पर असर अंदाज़ होती है अच्छी सोहबत के ज़रिये इंसान अच्छा बनता है और बुरी सोहबत के नताइज इंसान को बुराई की तरफ माइल करने की सूरत में ज़ाहिर होते हैं हदीस ए पाक का मफ़हूम है के इंसान अपने दोस्त के दीन पर होता है इस हदीस से भी हमें ये दर्स मिलता है के इंसान को दोस्त बनाते वक़्त बहुत एहतियात और समझदारी से काम लेना चाहिए और दोस्त बनाते वक़्त दीनदारी पर तवज्जोह देना चाहिए दीनदार को ही दोस्त बनायें जिसकी दोस्ती उस शख्स को भी दीनदारी की तरफ माइल करे

मौलवी हस्सान रज़ा का ये मज़मून "दोस्त किसे बनायें ? " मा शा अल्लाह बहुत खूब है इस मज़मून में मौलाना मौसूफ़ ने अहादीस और बुज़ुर्गानि दीन के अक़वाल की रौशनी में ये वाज़ेह किया है के दोस्त किसे बनाया जाये ? अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ है के मौलाना मौसूफ़ के इल्म ओ अमल में बरकतें अता फरमाए आमीन

तौहीद अहमद खान रज़वी

पेश ए लफ़्ज़

इंसान की ज़िन्दगी में दोस्त की बहुत अहमियत होती है सच्चा दोस्त वही होता है जो इंसान को अच्छाइयों की तरफ माइल करता है और बुराइयों से बचाने की कोशिश करता है वो कभी नहीं चाहता कि उसका दोस्त गुमराह हो जाए और अंधेरी राहों में भटकता फिरे वह कभी नहीं चाहता कि उसका दोस्त इस्लामी अक़ाइद से मुंह फेरे अगर कुछ लम्हे ऐसे आते भी हैं जिसमें उसका दोस्त दूसरों की सोहबत में बैठकर गलत रास्ता इख़्तियार कर लेता है तो वह अपने दोस्त की इसलाह करने की कोशिश करता है वहीं दूसरी तरफ एक बुरा दोस्त जो इंसान को गुमराहियों के दलदल में फंसा कर उसके ईमान को बर्बाद कर देता है बुरी दोस्ती के असरात यहां तक पहुंच जाते हैं के इंसान बुरी बुरी आदतों में पढ़कर दुनियावी जिंदगी तो बर्बाद करता ही है साथ साथ आखिरत भी बर्बाद कर लेता है मौजूदा ज़माने में जो गुमराही फैल रही है वहाबी, देवबंदी, अहले हदीस, मौदूदियत और तमाम बतिल फिरकों के जरासीम समाज में फैल रहे हैं उसके फैलने की असल वजह यह भी है कि एक सुन्नी शख्स बगैर सोचे समझे दुनियावी फायदे की खातिर जब किसी गुमराह शख्स से दोस्ती कर लेता है तो वह गुमराह शख्स रफ्ता रफ्ता अपने नज़रियों को सुन्नी शख्स के दिल में डाल देता है आखिरकार वह सुन्नी भी अपने अक़ाइद सही ना जाने की बुनियाद पर उसकी बातों को सही समझ कर उस पर ईमान ले आता है और बर्बाद हो जाता है इस तरह के वाक्यात कॉलेज और यूनिवर्सिटी में ज्यादा देखने में आते हैं क्योंकि वहां दोस्ती के नाम पर ऐसी वारदात होती रहती है इसलिए हर इंसान के लिए जरूरी है कि दोस्त बनाने से पहले उसे क़ुरआन और हदीस और शरियत ए इस्लामी की रौशनी में परखे फिर उससे दोस्ती के लिए हाथ आगे बढ़ाए तो यह उसके लिए बेहतर होगा

इस मकाले में हम अल्लाह तआला की तौफीक से दोस्ती की हकीकत और उसके उसूल को बयान करेंगे जो क़ुरआन और हदीस और बुज़ुर्गान ए दीन की तालीमात से मांखूज किए गए हैं अल्लाह तआला इस मकाले को कबूलियत अता फरमाए

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

दोस्ती की हक़ीक़त क़ुरआन ए मजीद की रौशनी में

हमारी दोस्ती का पहला मकसद इस्लाम यानी अहले सुन्नत व जमाअत का फरोग करना और हर लम्हा दीन ए इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ के लिए गामजन रहना होना चाहिए और दूसरा मकसद अपनी जिंदगी को शरियत ए इस्लामी के सांचे में ढालकर अपने दोस्तों को भी अच्छे और नेक आमाल की तरगीब देना चाहिए क्योंकि कयामत के दिन भी वही दोस्ती काम देगी जो दो मुत्तकीयों के दरमियान हो अगर हम बद किरदार गुमराह लोगों के साथ मिलकर कोई भी अच्छा काम करेंगे हालांकि हमारी नियत दुरुस्त हो तो ऐसे लोगों के साथ मिलकर अच्छा काम करने से बजाए नफा के नुकसान के इमकानात ज़्यादा होंगे ऐसी दोस्ती कयामत के दिन बजाय सवाब के जान का बवाल बन जाएगी इसी को अल्लाह तआला ने क़ुरआन ए मजीद में इरशाद फरमाया:

गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेजगार

(सूरेह ज़ुखरुफ़, 67)

अकसर मुफ़स्सेरीन ए इकराम ने इस आयत ए करीमा की तफसीर में हज़रत अली रदिअल्लाहु अन्हु का ये कौल पेश किया है

हज़रत अली रदिअल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

दो दोस्त मोमिन और दो दोस्त काफिर होते हैं एक मोमिन मर जाता है वो अर्ज़ करता है ऐ रब मेरे फलां शख्स मुझे तेरी और तेरे रसूल की इताअत करने का मशवरह देता था नेक काम करने का हुक्म देता था और बुरे काम से रोकता था वो मुझ से कहता था के एक दिन मुझे तेरे सामने आना पढ़ेगा ऐ मेरे रब मेरे बाद उसे गुमराह न कर देना और जैसे तू ने मुझे राह ए रास्त पर चलने की तौफ़ीक़ दी ऐसे ही उस को भी हिदायत पर क़ायम रखना और जिस तरह तूने मेरी इज़्ज़त अफ़ज़ाई की उसी तरह उस की भी इज़्ज़त अफ़ज़ाई करना जब उसका दोस्त मर जाता है तो अल्लाह दोनों को यकजा करके फरमाता है तुम दोनों एक दुसरे की तारीफ करो चुनाचे हर एक दुसरे के मुताल्लिक़ कहता है ये अच्छा भाई है , अच्छा दोस्त है , अच्छा साथी है

और जब दोनों काफिर दोस्तों में से एक मर जाता है तो वो अर्ज़ करता है मेरे रब फलां शख्स मुझे तेरी और तेरे रसूल की इताअत से मना करता था बुरे काम करने का मशवरह देता था और अच्छे काम से रोकता था और मुझ से कहता था मुझे तेरे पास आना नहीं है वो बुरा दोस्त, बुरा भाई, बुरा साथी है (तफ़्सीर ए मज़हरी , तफ़्सीर ए क़ुर्तुबी, तफ़्सीर दुर्रे मंसूर , तफ़्सीर इब्ने कसीर)

इमाम क़ुर्तुबी नई इस आयत के बारे में फ़रमाया

यह आयत हर मोमिन,मुत्तकी, काफिर और गुमराह के बारे में आम है (तफ़्सीर ए क़ुर्तुबी)

इस तफसील से यह साबित हो गया कि अगर तुमने किसी गुमराह शख्स से दोस्ती रखी और उसकी सोहबत इख़्तियार की तो तुम्हारा वही बुरा अंजाम होगा जो उस का होने वाला है फिर यह दोस्ती भी तुम्हें जहन्नम का ईंधन बनने से नहीं रोक पाएगी इसलिए दोस्ती करने से पहले देखें कि सामने वाला शख्स किस अकीदे पर है अगर वह अहले सुन्नत व जमाअत के अकीदे पर मजबूती से कायम है तो उस से दोस्ती करना अच्छा है और अगर ऐसा नहीं है तो यह दोस्ती तुम्हारे ईमान के लिए खतरनाक साबित होगी

दोस्ती के ताल्लुक से एक हदीस ए पाक

हुज़ूर अकरम ﷺ ने इरशाद फरमाया
आदमी अपने दोस्त के दीन (यानी तरीके) पर होता है इसलिए हर शख्स को चाहिए वह इस बात का जायज़ा ले कि उसका दोस्त कौन है? (तिर्मिज़ी , अबू दाऊद)

इस हदीस की तशरीह करते हुए अल्लामा मोहम्मद यासीन कसूरी नक्शबंदी लिखते हैं
एक दोस्त दूसरे दोस्त के अकाईद, अफकार से जरूर मुतास्सिर होता है दोस्त अच्छा हो तो ये भी आला अखलाक का मालिक होगा और अगर दोस्त बद अखलाक होगा तो ये भी बद अखलाक और बद ज़ुबान होगा
अरबी का मशहूर मकूला है (जिसका मफ़हूम है)
किसी शख्स से बराहे रास्त ना पूछो बल्कि उसके अहवाल उसके साथियों से दरयाफ्त करो यानी उसका साथी हुस्ने अखलाक का पैकर, दीनदार, नमाज़ी, साहिबे तक़वा और सादिक अमीन होगा तो यह भी उन सफात का जामे होगा वरना नहीं हदीस में भी यही हकीकत बयान की गई (अनवार ए नबवी शरह जामे तिर्मिज़ी)

अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलेह इस हदीस ए पाक की तशरीह करते हुए फरमाते हैं
दीन से मुराद या तो मिल्लतो मज़हब है या सीरत व अखलाक, दूसरे मायने ज्यादा ज़ाहिर हैं यानी अमूमन इंसान अपने दोस्त की सीरत, अखलाक इख़्तियार कर लेता है कभी उसका मजहब भी इख़्तियार कर लेता है लिहाजा अच्छों से दोस्ती रखो ताकि तुम भी अच्छे बन जाओ सूफिया फरमाते हैं
न साथ रहो मगर अल्लाह रसूल की फरमा बरदारी करने वालों के, ना दोस्ती करो मगर मुत्तकी से (यानी अल्लाह, रसूल के फरमाबरदारों की सोहबत इख़्तियार करो और मुत्तकी लोगों से दोस्ती करो) यानी किसी से दोस्ताना करने से पहले उसे जांच लो के अल्लाह रसूल का मानने वाला है या नहीं, सूफिया फरमाते हैं कि इंसानी तबीयत में अख़्ज़ यानी ले लेने की खासियत से हरीस (लालची) की सोहबत से हिर्स (लालच), ज़ाहिद की सोहबत से ज़ोहद, तक़वा मिलेगा ख्याल रहे कि ख़ुल्लत दिली दोस्ती को कहते हैं जिससे मोहब्बत दिल में दाखिल हो जाए यह ज़िक्र दोस्ती और मोहब्बत का है किसी फासिक, फाजिर को अपने पास बिठाकर मुत्तकी बना देना तबलीग है हुज़ूर अकरम ﷺ ने गुनाहगारों को अपने पास बुला कर मुत्तकियों का सरदार बना दिया (मिरात उल मनाजीह)

इस हदीस ए पाक का जिक्र फरमाते हुए हजरत दाता गंज बख्श रहमतुल्लाह अलेह लिखते हैं
अगर उस की सोहबत नेको के साथ है अगरचे वह खुद नेक ना हो तो वह सोहबत नेक है इसलिए की नेको की सोहबत उसे नेक बना देगी और अगर उसकी सोहबत बुरों के साथ है अगरचे वह नेक है तो यह बुरा है क्योंकि वह उसकी बुराइयों पर राज़ी है और जो बुराइयों पर राजी हो अगरचे वो नेक हो बहर हाल बुरा है (कशफ़ुल महजूब)
हदीस पाक में सराहत कर दी गई कि हर शख्स को यह चाहिए कि वह इस बात का जायजा ले कि उसका दोस्त कौन है क्या वो अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ीदे पर है? क्या उसका किरदार अच्छा है? क्या वह अल्लाह के हुक्मों की पाबंदी करता है? क्या वह गुनाहों से बाज़ रहता है? यह तमाम उमूर उसके अंदर देखना लाज़िमी होंगे तब जाकर उससे दोस्ती की जाएगी लेकिन मौजूदा दौर में अक्सर लोग दोस्ती में इन सब चीजों का एतबार नहीं करते बल के अपने दुनयावी फायदे देखते हैं अगर इस दोस्ती से आरज़ी तौर पर फायदा हो भी जाए लेकिन यह आखिरत में कुछ काम ना आएगी और वहां हमारी जान का वबाल बन जाएगी इसलिए ज़रूरी है कि दोस्ती सुन्नी सहीहुल अक़ीदा इंसान ही से करें

बुज़ुर्गाने दीन के अकवाल

हजरत मालिक बिन दीनार रदिअल्लाहु अन्हु ने अपने दामाद हज़रत मुगीरा बिन शोबा रदिअल्लाहु अन्हु से फरमाया:
ऐ मुगीरा जिस भाई या साथी की रिफ़ाक़त तुम्हें दीनी फायदा ना पहुंचाए तुम इस जहान में उसकी सोहबत से बचो ताकि तुम महफूज़ रहो (कशफ़ुल महजूब)

हजरत यहया बिन मुआज रदिअल्लाहु अन्हु फरमाते हैं
वह दोस्त बहुत बुरा है जिसको दुआ करने की नसीहत करनी पड़े (क्योंकि एक लम्हे की सोहबत का हक यह है कि उसे हमेशा दुआए खैर में याद रखा जाए) और वह दोस्त बहुत बुरा है जिसकी सोहबत खातिर तवाज़ो की मोहताज हो (क्योंकि सोहबत का सरमाया ही यह है कि हमेशा बाहमी खुशी व मसर्रत में गुज़रे)और वह दोस्त बहुत बुरा है जिससे गुनाह की माफी मांगने की ज़रूरत पेश आए (इसलिए के उज्र ख़्वाही बेगानगी की अलामत है और सोहबत में गैरियत और बेगानगी जुल्म है) (कशफ़ुल महजूब)

शाह अब्दुल अजीज रहमतुल्लाह अलेह ने अपनी तफ़्सीर फत्हुल अज़ीज़ में अल्लाह तआला के इस फरमान **वो तो इस आरज़ू में हैं के किसी तरह तुम नरमी करो तो वो भी नरम पड़ जायें** के ताल्लुक से सहल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी रहमतुल्लाह अलैह का कौल नकल किया है फरमाते हैं
हकाइक अत तंजील में है
के मर्द सहीहुल ईमान और मोमिन खालिस के लिए लाज़िम है कि गुमराहों, बिदअतियों से मुहब्बत न करे और ना उनके साथ मजलिस करे और ना मेलजोल रखे और ना उनके हमराह खाए पिए और उसकी ज़ात में से गुमराहों के साथ नफरत और अदावत का इज़हार हो और जो शख्स बद अकीदा लोगों से दोस्ती और प्यार करता है उस से ईमान का नूर खत्म हो जाता है
(तफसीर अज़ीज़ी, पारह 29)

4 - अल्लामा जलालुद्दीन रूमी रहमतुल्लाह अलेह सोहबत के ताल्लुक से मसनवी शरीफ में फरमाते हैं
थोड़ी सी देर औलिया की हमनशीनी 100 साला बेरिया इबादत से बेहतर है
अगर तू संग ए खारा व संगमरमर हो जब साहिब ए दिल के पास पहुंचेगा तो तू मोती बन जाएगा
नेक की सोहबत तुझे नेक बना देगी बुरे की सोहबत तुझे बदबख्त बना देगी
(मसनवी मौलाना रूम, दफ्तर अव्वल, सफा 101 102)

दोस्त किसे बनायें.?

आप हज़रात बखूबी जान गए होंगे के एक अच्छे दोस्त और बुरे दोस्त में क्या फर्क होता है? और हमको किसे अपना दोस्त बनाना चाहिए? हमने क़ुरआन, हदीस और बुज़ुर्गाने दीन के अक़वाल की रौशनी में फर्क ज़ाहिर कर दिया खुलासा ए कलाम ये, अच्छा दोस्त वही है जो खुद भी सीधे रास्ते पर चले और दूसरों को भी सिरात अल मुस्तकीम पर चलाने के लिए कोशिश करे जो खुद भी हराम कामों से बचता हो और दूसरों को भी हराम कामों से बचाने की कोशिश करता हो जो खुद भी अल्लाह और रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह के महबूब बंदो से मोहब्बत करता हूं और दूसरों को भी उन ज़वात ए मुक़द्दसा से मुहब्बत करने का दर्स देता हो जो खुद भी अल्लाह और हुज़ूर अकरम ﷺ के दुश्मनों से नफरत करता हो और दूसरों को भी नफरत करने की तलकीन करता हो और बुरा दोस्त वह है जिसका खुलासा इन अशआर में है जिसका मफ़हूम है:

बुरे दोस्त की सोहबत से दूर भागो क्योंकि बुरा दोस्त बुरे सांप से भी खतरनाक और जानलेवा है क्यों के सांप के डसे हुए को सिर्फ जान का खतरा है और बुरे दोस्त की सोहबत से जान के साथ ईमान का भी खतरा है
बुरी सोहबत की मिसाल ऐसी है जैसे पाक साफ दूध में दो कतरे पेशाब के गिर जाएं तो दूध पलीद हो जाता है और वह दूध पीने के काबिल नहीं रहता है इसी तरह बुरे दोस्त की सोहबत से नेक इंसान भी बुरा हो जाता है और उस सोहबत की इंतहा यह होती है कि उससे ईमान का नूर खींच लिया जाता है और बर्बाद हो जाता है इसलिए जरूरी है कि अपनी ज़िन्दगी को अच्छे दोस्तों के साथ मुज़य्यन करें जो तुम्हें दुनिया में कामयाब करें और आखिरत में भी अपने साथ जन्नत में ले जाएं

आखिर में आला हज़रत रहमतुल्लाह अलेह की वसीयत को पेश करना चाहूंगा जो आपने उम्मते मुस्लिमा की रहनुमाई के लिए फ़रमाई थी
तुम मुस्तफा ﷺ की भोली भेड़ें हो, भेड़िए तुम्हारे चारों तरफ हैं यह चाहते हैं कि तुम्हें बहका दें तुम्हें फ़ितने में डाल दें तुम्हें अपने साथ जहन्नम में ले जाएं उन से बचो और दूर भागो, देओबंदी हुए राफ्ज़ी हुए, नेचरी हुए ,कादयानी हुए , चकड़ालवी हुए गरज़ कितने ही फ़िरक़े हुए और अब सब से नए गांधवी हुए जिन्होने उन सब को अपने अंदर ले लिया ये सब भेड़िये हैं इन के हमलों से अपना ईमान बचाओ हुजूर ﷺ अल्लाह के नूर हैं, हुजूर से सहाबा रौशन हुए और उनसे ताबाईन रोशन हुए, ताबेईन से तबे ताबेईन रोशन हुए उनसे अयम्मा ए मुज्तहेदीन रौशन हुए उनसे हम रौशन हुए अब हम तुमसे कहते हैं यह नूर हमसे लो तुम्हें इसकी ज़रूरत जो कि तुम हम से रोशन हो, वह नूर यह है कि अल्लाह और रसूल की सच्ची मोहब्बत उनकी ताजीम और उनके दोस्तों की खिदमत और उनकी तकरीम और उनके दुश्मनों से सच्ची अदावत

जिससे अल्लाह रसूल की शान में अदना तौहीन पाओ फिर वह तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यों ना हो फौरन उससे जुदा हो जाओ जिसको बारगाह ए रिसालत में जरा भी गुस्ताख देखो फिर वह तुम्हारा कैसा ही बुज़ुर्ग मुअज़्ज़म क्यों ना हो अपने अंदर से उसे दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दो (वसाया शरीफ)

इस वसीयत पर आप हजरात अमल करें और मज़हब ए अहले सुन्नत वा जमाअत पर कायम रहें अल्लाह से दुआ है कि हमें बद अकीदा लोगों की सोहबत से बचाए और ईमान पर कायम रखे आमीन सुम्मा आमीन

22 अप्रैल 2020 बरोज़ बुध